15

गुरु–शिष्य

रचनाकार का परिचय : नामः विश्वनाथ त्रिपाठी, जन्मः 16 फरवरी 1932 ई.
प्रमुख रचनाएँः– कुछ कहानियाँ; कुछ विचार, हिंदी आलोचना, इस दौर में (आलोचना), जैसा कह सका (कविता संग्रह), व्योमकेश दरवेश (संस्मरण), नंगातलाई का गाँव (आत्मकथा) इत्यादि।

अधिगम प्रतिफल :

- संस्मरण विधा को पढ़कर पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं विश्लेषण करते हैं। विशेष बिंदु खोजते हैं।
- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं।
- अपने पाठ और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर अपनी बात प्रभावी ढंग से लिखते हैं।

पाठ का परिचय– प्रस्तुत पाठ लेखक के संस्मरण 'व्योमकेश दरवेश' का एक अंश है। इसमें एक जिज्ञासु शिष्य और विशाल–हृदय गुरु के प्रथम संपर्क का वर्णन है। लेखक ने अपने गुरु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का पुण्य स्मरण किया है।

विधा का परिचय– यह पाठ 'संस्मरण' विधा में रचित है। संस्मरण में रचनाकार अपने जीवन से जुड़ी बातों का जिक्र करता है। कभी यह याद केवल लेखक से ही संबंधित होती है, तो कभी दूसरों के साथ बीते क्षणों की याद भी शामिल होती है। अतः किसी प्रसंग या किसी विषय में अपनी स्मृति उतार लेना 'संस्मरण' कहलाता है।

सार संक्षेप/सारांश

विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा रचित उपन्यास को शब्दों को 'व्योमकेश दरवेश' संस्मरण विधा में रचित है। इसका अंश यह पाठ 'गुरु–शिष्य' शीर्षक से संकलित है। लेखक एम० ए० में प्रवेश लेना चाहते है। काशी विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में जहाँ पं. रामचंद्र शुक्ल, बाबू श्याम सुंदर दास, हरिऔध आदि पढ़ा चुके हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उन्हें पढ़ाएँगे। यह सब सोचकर वे उत्साहित भी थे और डरे हुए थी।

© JCERT not to be republished

विश्वविद्यालय में प्रवेश करते ही वहाँ का दृश्य वर्णन उन्होंने किया है, साथ ही ग्रामीण औरतों के माध्यम से वहाँ की संस्कृति को दर्शाया है।

लेखक अपने घर–शहर से दूर आए हैं, उनके लिए बनारस अनजाना है लेकिन द्विवेदी जी का शिष्य बनने की संभावना उन्हें जादू लोक में ले जा रही थी। लेखक, द्विवेदी जी के घर जाते हैं। द्विवेदी जी ने उनसे बातचीत की। लेखक ने पं. राम सुरेश त्रिपाठी जी का हवाला दिया। द्विवेदी जी ने सामान्य बा. तचीत के बाद आर्थिक कष्ट के बारे में पूछा, लेकिन लेखक अर्थ का प्रबंध कर लेते उन्हें बस आशीर्वाद चाहिए था। द्विवेदी जी ने उन्हें समझाया कि छात्र को मधुकरी वृति का होना चाहिए अर्थात् जहाँ से ज्ञान मिले प्राप्त करना चाहिए। लेखक उनसे मिलकर उत्साहपूर्वक पं. राम सुरेश त्रिपाठी के पास गए। उन्होंने आश्वस्त किया और नामवर सिंह से मिल लेने के लिए कहा।

इस तरह इस पाठ में गुरु–शिष्य परंपरा को दिख गया है। गुरु का शिष्य के प्रति स्नेह और शिष्य का गुरु के प्रति सम्मान अनुकरणीय है।

गद्यांश की व्याख्या–1

''दूसरे दिन सवेरे आठ बजे के आस–पास जब मैं त्रिपाठी जी के निवास 'आत्रेय' भवन से निकला..समझ गया कि यह स्वर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का ही है'' (पृष्ठ संख्या 113–114)

शब्दार्थ –

शब्द	**अर्थ**
पैताने	पैर के नीचे की ओर
छतजार	घने
शहराती	शहर के
बूँदा बाँदी	हल्की बारिश
लोक गीत	सामान्य जनों में पसरा गीत

© JCERT not to be republished

संस्थापित	नियमपूर्वक स्थापित किया हुआ
पस्त	हारा हुआ
संभ्रम	विकलता, बेचौनी
फर्श	जमीन
पावन	पवित्र
स्पंदल	धड़कन

व्याख्या –

लेखक विश्वनाथ त्रिपाठी काशी विश्वविद्यालय में एम० ए० में प्रवेश लेने के लिए कानपुर से आते हैं। पं. रामसुरेश त्रिपाठी के निवास' 'आत्रेय' भवन से जब वे निकल हैं तो हल्की बूँदा–बाँदी हो रही होती है। उन दिनों व्यक्ति में बहुत सरलता होती थी। लेखक एक पैर की तरफ फटा पैजामा और अपने दोस्त की कमीज पहने थे। काशी विश्वविद्याल का क्षेत्र उन दिनों बहुत खुला था। आज की तरह इमारतें नहीं थी। विश्वविद्यालय में प्रवेश करते ही बाईं ओर महिला विश्वविद्यालय था और दाई ओर सर सुंदरलाल अस्पताल। सड़क के दोनों ओर घने वृक्ष थे, आसपास की ओर देखने पर उन पेड़ों के पत्ते ही दिखाई पड़ते थे। बनारस के आस–पास या आप देख सकते हैं कि उत्तर प्रदेश और बिहार में औरते लाल – कत्थई साड़ी बहुत पहनती हैं। अक्सर देखा जा सकता था कि वे औरतें घास काटती और उनका गट्ठर बाँधकर घर ले जातीं। इसके दौरान वे हँसी ठठोली करती, गातीं या झगड़ा करती। दिल की साफ ये औरतें अपने मन में कोई बात दबाकर नहीं रखती थी। लेखक कहते हैं कि गुस्से में चुप रहना, न बोलना, ये शहर में रहने वाले लोगों को आता है। किसी भी क्षेत्र की अपनी विशेषता होती है जिसे लिखकर जितना बताया जा सकता है उससे कहीं अधिक उसे महसूस किया जा सकता है। काशी विश्वविद्यालय के भीतर भी वहाँ की बोली सुनकर, लेखक को ऐसा लगा जैसे यह प्रकृति का ही कोई व्यवहार हो। लोक गीत से लोक संस्कृति जुड़ी रहती है। विश्वविद्यालय की सड़कों पर कार या ट्रक नहीं के बराबर दिखाई पड़े। उस समय रिक्शे बहुत चलते थे। रिक्शों की गति भी तेज होती थी।

प्रदूषण मुक्त वातावरण में विश्वविद्यालय के अंदर आते ही अमलतास, गुलमोहर, आम, नीम, घासों की मिली–जुली गंध आती थी। काशी विश्वविद्यालय मालवीय जी द्वारा संस्थापित विश्वविद्यालय है, जिसमें पं. रामचंद्र शुक्ल, बाबू श्यामसुंदर दास, हरिऔध पढ़ा चुके हैं, जिसमें पं० राम प्रकट मणि त्रिपाठी, पं. शिवबख्श जी पढ़ चुके हैं, उसमें मैं प्रवेश पाऊँगा। पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी पढ़ाएँगे, यह सब सोचकर लेखक अपने भविष्य से बहुत प्रभावित और आतंकित थे। प्रभावित इसलिए कि इतने प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में पढ़ने का अवसर मिलेगा और आतंकित इसलिए कि इतने बड़े विश्वविद्यालय और इतने बड़े गुरु की शिष्यत्व वे ग्रहण कर पाएँगे या नहीं।

© JCERT not to be republished

लेखक पहली बार अपना शहर छोड़कर कानपुर आ गए थे। बनारस उनके लिए नयी जगह थी। इतने मानासिक दबाव के बाद भी द्विवेदी जी का शिष्य बनने की बात इतनी मोहक थी कि लग रहा था जैसे कोई जादू लोक हो। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को पंडित जी भी कहते है। लेखक उनके घर पहुँच जाते हैं। गुरु के प्रति हृदय में इतना सम्मान और संकोच था कि बरामदे में बने सीमेंट के आसनों' पर नहीं बैठकर वे जमीन पर बैठ गए। दाहिने हाथ की तरफ से कुछ आवाज आ रही थी – जीवन देने वाली वह आवाज आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की ही थी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:–

1. त्रिपाठी जी के निवास का क्या नाम था?
2. 'पैजामा पैताने से फटा हुआ था' इस वाक्यांश से लेखक क्या बताना चाहते हैं?
3. लेखक बरामदे पर बने सीमेंट के आसन पर क्यों नहीं बैठे?

गद्यांश की व्याख्या–2

''पंडित जी के घर पहुँच गया.......................................पंजों को खुजलाते हुए। पंडितजी मेरे सामने खड़े थे।'' (पृष्ठ सं. 114–115)

शब्दार्थ –

शब्द	**अर्थ**
आगत	आया हुआ
गौर पर्ण	गोरा रंग
ज्ञात	पता
संसंभ्रम	संभ्रम के साथ, बेचैनी के साथ
बैहें कटी	बाँह कटी हुई
स्पर्श करती हुई	छूती हुई
पिंडली	घुटने के पीछे का निचला मांसल भाग
काया	शरीर

© JCERT not to be republished

व्याख्या –

लेखक फर्श पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे तभी सामने के दरवाजे से दस–बारह साल की एक गोरी लड़की आई। उसने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया और एक मोढ़ा देकर के बड़े आदर और स्नेह से लेखक को उस पर बैठने के लिए कहा। उस लड़की की विनम्रता और शालीनता देखकर लेखक ने अनुमान लगा लिया कि ये द्विवेदी जी की पुत्री हो सकती है 'भारती' जिसे मुन्नू बुलाते थे वही होंगी।

जब कमरे में आए हुए सभी लोग चले गए तब पंडित जी यानी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी बाहर आए। उन्हें देखते ही लेखक बेचैनी से उठ खड़े हुए। लंबा भारी शरीर, खद्दर यानी मोटे सूत की बाँह कटी कमीज जिसमें जेब थी वो उन्होंने पहना था। गोरा रंग, पैरों की ऊँगलियों को छूती हुई धोती पहने, दाएँ पैर की घुटने के पीछे का निचला मांसल भाग यानी पिंडली को बाएँ पैर के पीछे ले जाकर उसे लपेटते हुए ऊँगलियों से बाएँ पैर के पंजों की खुजलाते हुए, पंडित जी लेखक के सामने खड़े थे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर है।

4. लेखक ने कैसे अनुमान लगाया कि यह लड़की द्विवेदी जी की पुत्री होगी?
5. आचार्य जी के बाहर आने पर लेखक की क्या प्रतिक्रिया हुई?
6. आचार्य जी का परिधान (वस्त्र) क्या था?

गद्यांश की व्याख्या–3

'मैंने लपककर चरण–स्पर्श किया............................मेरा नाम ले लेना।'' (पृष्ठ सं 115 से 116)

शब्दार्थ –

शब्द	अर्थ
शिष्यत्व	शिष्य होने का भाव
मधुक्कड़ी	भवरें की तरह
वृत्ति	मन अथवा चित्र का व्यापार
प्रमुदित	आनंदित, प्रसन्न
प्रफुल्लित	खिला हुआ, खुश

© JCERT not to be republished

व्याख्या –

इस गद्यांश में लेखक और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के बीच बात–चीत है। लेखक कहते हैं कि आपके चरणों में जगह मिल जाए तो मेरा जीवन बन जाएगा। आचार्य जी कहते हैं कि कोई किसी का जीवन नहीं बनाता, व्यक्ति खुद अपना जीवन बनाता–बिगाड़ता है। लेखक कहते हैं कि वे एम. ए. में प्रवेश चाहते है जिससे उन्हें आचार्य जी का शिष्यत्व मिल जाए। आचार्य जी के पूछने पर वे यह भी बताते हैं कि तीन अंक कम रहने से उन्हें फर्स्ट क्लास नहीं मिल पाया। इससे पहले की कक्षाओं में उनका फर्स्ट क्लास था।

कानपुर के बी. एस. एस. डी. विश्वविद्यालय में उनके अध्यापक उनसे आशा रखते थे कि वे यूनीवर्सिटी में टॉप करेंगे। प्रथम श्रेणी भी नहीं आई, इसी शर्म से वे पं. रामसुरेश त्रिपाठी के कहने पर यहाँ आ गए।

लेखक बोलते समय घबराहट में क्या बोले, क्या नहीं, वे समझ नहीं पा रहे थे। गुरु–शिष्य का आत्मीय संबंध इतना था कि पंडित जी ने पहली ही बार अपने शिष्य से मिलने पर पूछते हैं कि ''कुछ आर्थिक कष्ट हैं?'' लेखक कहते हैं कि पैसे का प्रबंध वे कर लेंगे, बस कृपा चाहिए। आचार्य जी कहते हैं कि गुरु–शिष्य का संबंध बहुत आत्मीय होता है। विद्यार्थी को मधुकरी वृत्ति का होना चाहिए यानी जैसे भँवरा फूल का रस, जहाँ से मिलता है वहाँ से पी लेता है इसी प्रकार विद्यार्थी को भी जहाँ से ज्ञान मिले वहाँ से प्राप्त कर लेना चाहिए।

आचार्य जी के बारे में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने कहा था कि 'आप हिंदी के सूर्य है' लेखक इसी बात को दुहरा रहे थे। लेखक ने कहा कि आपके पास रहूँगा तो कुछ सीख लूँगा। आचार्य जी ने कहा कि किसी पर अंध श्रद्धा नहीं करनी चाहिए। फिर उन्होंने लेखक को भोजन के लिए पूछा और लेखक मना कर चरण–स्पर्श करके प्रसन्न मन से, पं. रामसुरेश त्रिपाठी के डेरे पर यानी 'आत्रेय भवन' लौट आए। उनसे उत्साहपूर्वक सब कुछ बताए। वे संतुष्ट हुए और बोले– तुम अब गाँव जाओ। प्रवेश लेकर ध्यान से पढ़ो। उन्होंने नामवर सिंह से मिलने की बात की और उनके बारे में बताया कि वे बहुत प्रतिभाशाली हैं, द्विवेदी जी उन्हें बहुत मानते। इस तरह गुरु और शिष्य का अत्यंत आत्मीय संबंध वर्णित किया गया है।

निम्नलिखित प्रश्नों के के उत्तर उत्तर दें :

7. लेखक किस कक्षा में प्रवेश चाहते थे?
8. 'आर्थिक कष्ट' से क्या तात्पर्य है?
9. विद्यार्थी की वृत्ति कैसी होनी चाहिए?

© JCERT not to be republished

भाषा संदर्भ

1. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है – तत्पुरुष समास। इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है और पूर्वपद गौण होता है। तत्पुरुष समास की रचना में समस्त पदों के बीच आने वाले परसमों जैसे–का, से, पर इत्यादि का लोप हो जाता है।

   तत्पुरुष समास के पाँच उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर:

(i) लोकगीत – लोक के गीत

(ii) चरणस्पर्श – चरण का स्पर्श

(iii) बैह कटी – बाँह से कटी

(iv) विश्वविद्यालय – विश्व का विद्यालय

(v) अधखुला – आधे से खुला

2. 'कानपुर की याद बेहद सता रही थी और बनारस अपनी सारी गरिमा के बावजूद निहायत अनजाना लग रहा था।'

   ऊपर के वाक्य में दो उपवाक्य आए हैं। दोनों ही उपवाक्य अपने पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए एक–दूसरे पर आश्रित नहीं है। ये दोनों उपवाक्य होते हुए भी पूर्ण अर्थ का बोध कराते हैं। इनके बीच समानाधिकरण संबंध है। दोनो रेखांकित उपवाक्य और समानाधिकरण योजक अध्यय से जुड़ा है। यह एक संयुक्त वाक्य है। किसी संयुक्त वाक्य के उपवाक्य आपस में तथा' 'फिर', 'अथवा,' अन्यथा', 'किंतु', 'लेकिन' 'इसलिए' इत्यादि समानाधिकरण योजक अव्यय से जुड़े रहते हैं।

   पिछले पाठों में आए किन्हीं पाँच संयुक्त वाक्यों को छाँटकर लिखिए।

उत्तर :–

(i) धरती पर आदिवासियों का नृत्य हो रहा है और आसमान में बादल आँख मिचौली खेल रहे है।

(ii) चूँकि महीना अगस्त का था, इसलिए धान की क्यारी की भी न्यारी हरियाली थी।

(iii) प्रकृति या परमात्मा ने इसे अपने हाथ से यह सब किया होगा, अन्यथा मनुष्य जाति में इतनी सामर्थ्य कहाँ।

© JCERT not to be republished

(iv) पानी कुछ पीलापन लिए हुए है और यों सरसराता–हरहराता गिरता है कि कुछ भयंकर मालूम पड़ता है।

(v) यहाँ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की ओर से एक बँगला बनवा दिया गया है परंतु खाने–पीने के सामान का यहाँ भी अभाव है।

बहुवैकल्पिक प्रश्नः–

प्रश्न 1. गुरु–शिष्य पाठ किस विधा में रचित है?

क). कहानी ख). उपन्यास अंश ग), डायरी घ). निबंध

प्रश्न 2. 'गुरु शिष्य' पाठ किनके द्वारा लिखा गया है ?

क). आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ख), विश्वनाथ त्रिपाटी ग). पं. राम सुरेश त्रिपाठी घ). मदन मोहन मालवीय

प्रश्न 3. ग्रामीण औरतें जब साथ–साथ चलती हैं तो क्या करती हैं?

क). गाती हैं ख). बातें करती हैं ग). झगड़ा करती हैं घ). उपर्युक्त सभी.

प्रश्न 4. काशी विश्वविद्यालय में लेखक के गुरु कौन थे?

क). आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ख). पं रामसुरेश त्रिपाठी ग). आचार्य रामचंद्र शुक्ल घ). मदन मोहन मालवीय

प्रश्न 5. प्राणों में पावन स्पंदन भरने वाली आवाज' किनकी थी?

क). लेखक की ख) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की ग) आचार्य की पुत्री की घ). अतिथियों की

प्रश्न 6. लेखक के सामने जो बारह–तेरह वर्ष की लड़की आई वो कौन थी ?

क). द्विवेदी जी की बड़ी पुत्री

ख). द्विवेदी जी की मंझली पुत्री

ग). द्विवेदी जी की छोटी पुत्री

घ). इनमें से कोई नहीं'।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 7. 'कोई दूसरा किसी का जीवन नहीं बनाता' यह वाक्य किसने कहा?

क) लेखक ने ख), लेखक के मित्र ने ग). औरतों ने (घ). आचार्य ने

प्रश्न 8. लेखक किस कक्षा में प्रवेश पाना चाहते थे?

क) आई० ए०, ख). बी० ए० ग) एम० ए० घ) बी० एड०

प्रश्न 9. लेखक बी० ए० में कितने अंकों से फर्स्ट क्लास के लिए चूक गए थे?

क). 2 अंकों, ख). 3 अंकों ग). 4 अंकों घ). 5 अंकों

प्रश्न 10. सबसे बड़ा आत्मीय संबंध किसके बीच होता है?

क) पिता–पुत्र ख) माता–पुत्र (ग), मित्र–मित्र घ) गुरु–शिष्य

प्रश्न 11. 'आप हिंदी के सूर्य है' यह वाक्य किसने कहा था?

क) डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने

ख) विश्वनाथ त्रिपाठी ने

ग) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने

घ). डॉ. नामवर सिंह ने।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'गुरु–शिष्य' पाठ में विद्यार्थी की जो वेश–भूषा है। उससे उस विद्यार्थी के बारे में क्या परिलक्षित होता है?

उत्तरः विद्यार्थी की वेश–भूषा से प्रतीत होता है कि वह गाँव–देहात का बालक है, जिसकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं है।

प्रश्न 2. काशी विश्वविद्यालय का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तरः काशी विश्वविद्यालय विस्तृत क्षेत्र में फैला है। उसका निर्माण सुनियोजित ढंग से किया गया है। सड़क के किनारे छायादार वृक्ष लगे हैं। सड़क के बाई ओर महिला विद्यालय है, और

© JCERT not to be republished

दायीं ओर सटे सुंदरलाल अस्पताल है। ग्रामीण महिलाएँ घास काटती, गट्ठर बाँध अपने घर को जाती हुई, बात–चीत करते, झगड़ते, गाते हुए जाती हैं। चारों ओर खुला–खुला मैदान, तेजी से बढ़ते हुए रिक्शे बिल्कुल सुहाना माहौल था।

प्रश्न 3. लेखक ने बनारस के आस–पास की ग्रामीण औरतों का चित्रण किस प्रकार किया है? वहाँ के परिवेश और आपके परिवेश में क्या अंतर है?

उत्तरः लेखक ने बनारस के आस–पास की ग्रामीण औरतों के बारे में बताया है कि लाल–कथ्थई रंग की साड़ी पहने ये औरतें आपस में बातचीत करना, हंसी ठिठोली करना, झगड़ा करना, बिल्कुल उन्मुक्त होकर घास काटती, गट्ठर बाँधती और घर ले जाती। वहाँ का परिवेश और हमारा परिवेश ग्रामीण तो लगभग एक जैसा ही है लेकिन शहरी परिवेश में थोड़ी भिन्नता है। धन, शक्ति और अच्छी सामाजिक स्थिति प्राप्त करने के अपने सपनो का पीछा करना प्रिय है। जीवन में नई–नई समस्याओं से जूझते हुए व्यक्ति अपने स्वाभाविक रूप में नहीं रह पाता।

प्रश्न 4. लेखक फर्श पर ही क्यों बैठ गया?

उत्तरः सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रति सम्मान भावना और कुछ बेचैनी की हालत में लेखक फर्श पर बैठ गए।

प्रश्न 5. लेखक कानपुर से शर्म के मारे क्यों भाग आया था?

उत्तरः बी. एस. एस. डी. कॉलेज, कानपुर के अध्यापक लेखक से यह आशा करते थे कि वह टॉप करेगा लेकिन लेखक को प्रथम श्रेणी में तीन अंक कम आए। इस कारण वे शर्म के मारे कानपुर से बनारस आ गए। इसमें उनके गुरु त्रिपाठी जी ने उनका मार्ग दर्शन किया।

प्रश्न 5. संप्रसंग व्याख्या करें :–

"जब तुम मेरे शिष्य हो गए तो गुरु–शिष्य से बढ़कर आत्मीय संबंध और कौन होता है? विद्यार्थी को मधुकरी वृत्ति का होना चाहिए। जहाँ से भी हो ज्ञान ग्रहण करना चाहिए।"

उत्तरः प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से द्विवेदी जी लेखक से कहते हैं कि गुरु–शिष्य का संबंध संसार में सबसे अधिक आत्मीय होता है। संसार का कोई भी गुरू हो, शिष्य के लिए ज्ञानदायक होता है, इसलिए ज्ञान अथवा गुरु जहाँ मिले, अवश्य ही प्राप्त कर लेना चाहिए। जिस प्रकार भँवरा एक फूल से बंधा नहीं रहता, उसी प्रकार शिष्य को भी 'मधुकरी वृत्ति' अपनाते हुए, जहाँ से भी हो ज्ञान ग्रहण करना चाहिए।

© JCERT not to be republished

गद्यांश के प्रश्नों के उत्तरः–

1. त्रिपाठी जी के निवास का नाम 'आत्रेय भवन' था।
2. प्रस्तुत वाक्यांश से लेखक उस समय के विद्यार्थी और सादा रहन–सहन के बारे में की सरलता बताना चाहते हैं।
3. लेखक के मन में द्विवेदी जी के लिए इतना आदर और मान सम्मान था, साथ ही मन में एक संकोच और बेचैनी भी थी इसलिए वे बरामदे पर बने सीमेंट के आसन पर न बैठ कर फर्श पर ही बैठ गए।
4. उस लड़की के व्यक्तित्व और वाणी में जो विनम्रता एवं शालीनता थी लेखक ने उसी से अंदाजा लगाया कि ये द्विवेदी जी की पुत्री हैं।
5. आचार्य जी के बाहर आने पर लेखक बैचौनी से उठ खड़े हुए।
6. आचार्य जी ने पैर की ऊँगलियों को स्पर्श करती हुई धोती पहनी थी। उनका कुर्ता खद्दर का था जिसमें जेब थी और बाँह कटा हुआ था।
7. लेखक एम० ए० में प्रवेश चाहते थे।
8. आर्थिक कष्ट से तात्पर्य रुपये पैसे की तंगी से है।
9. विद्यार्थी की वृत्ति मधुकरी होनी चाहिए अर्थात् जहाँ से ज्ञान मिले वहाँ से ले लेना चाहिए।

बहुवैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर

1. (क) उपन्यास – अंश
2. (ख) विश्वनाथ त्रिपाठी
3. (घ) उपर्युक्त सभी
4. (क) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. (ख) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. (ग) द्विवेदी जी की छोटी पुत्री
7. (घ) आचार्य ने
8. (ग) एम० ए०
9. (ख) 3 अंकों
10. (घ) गुरु–शिष्य
11. (क) डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने

© JCERT not to be republished